P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महात्मा ज्योतिबा फुले के सामाजिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीयूष हर्षवाल
व्याख्याता,
राजनिति विज्ञान विभाग,
स्वामी महाविद्यालय,
रतनगढ़, चूरू, राजस्थान,
भारत

सारांश

आज के आधुनिक विज्ञान के युग में फुले के विचारों की अधिक प्रसांगिकता है। फुले वैज्ञानिक–वैज्ञानिक विचाराधारा के थे। फुले ने अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विश्व का ज्ञान भण्डार सब के लिए खोल दिया। वह दैवीय एवं भाग्य की कल्पना को भी अर्थहीन मानते हैं। फुले ने वैज्ञानिक विचारों के आधार पर ही समाज परिर्वतन का अभियान चलाया, मानव मुक्ति का संकल्प किया और अपने महान सामाजिक सुधार के विचारों का परिचय दिया, आज के युग में अधिक प्रसांगिक हैं– मानव मात्र की समानता के समर्थक थे उन्होंने अस्पृश्यता, अशिक्षा आदि सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने, किसानों की स्थिति सुधारने और समाज में महिलाओं को उने अधिकार दिलाने का उल्लेखनीय कार्य किया था। वे जाति, पंथ, सम्प्रदाय, लिंग, भाषा क्षेत्र आदि के नाम पर होने वाले भेदभाव के प्रबल विरोधी थे। शिक्षा विशेष रूप से बालिका शिक्षा के प्रसार हेतु महात्मा ज्योतिबा फुले के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।[5]

''सामाजिक कुरीतियां के खिलाफ बुलंद आवाज उठाने वाले व महिला सशक्तिकरण के अग्रणी नेता को शत्–शत् नमन् करते है''।

मुख्य शब्द : महात्मा ज्योतिबा फुले, सामाजिक कुरीतियाँ, समाज सेवक।

प्रस्तावना

भारत में अनेक महान समाज सुधारक हुए हैं, उनमें महात्मा ज्योतिबा फुले का नाम आदर के साथ लिया जाता है। वे सक्रिय एवं शीघ्र परिवर्तन के सुधारक थे। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे प्रत्येक कार्य को शीघ्र अति शीघ्र एवं निडरता के साथ करते थे। उनका मानना था कि सही कार्य के लिए कभी भी नहीं डरना चाहिए। उनके जीवन की ''कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था''। उन्होंने समझाया कि समाज की उन्नति शिक्षा द्वारा संभव है। इस प्रकार शिक्षा का द्वार खोलने वाले प्रथम भारतीय थे। शिक्षा के माध्यम से उन्होंने महिला उत्थान एवं अछूतों द्वारा सम्बंधी अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। फुले ने किसानों की दयनीय स्थिति को सुधारने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने विश्व परिवार वाद का समर्थन किया। ज्योतिबा फुले सत्य को ही धर्म की संज्ञा देते है, उसी को महत्व देते हैं। उनका आदर्श वाक्य है– ''सत्यमेव जयते''

उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एवं समस्त क्षेत्रों में अपना आधार पर विभक्त होना, उसमें उत्पन्न हुई सामाजिक एवं आर्थिक विषमता ज्योतिबा के चिन्तन के मुख्य केन्द्र बिन्दु रहे हैं। उन्होनें देखा कि समाज के कुछ लोग सामाजिक स्थिति की दृष्टि से उच्च है, उन्हीं के हाथों में आर्थिक सता निहित है। यही वर्ग समाज के अन्य वर्गों का शोषण कर रहा है। ज्योतिबा एक वर्गहीन और शोषण मुक्त समाज का निर्माण करने हेतु सामाजिक क्रांति करना चाहते थे। इसलिये उन्हें ''सामाजिक क्रांति का अग्रदूत'' का जाता है, ज्योतिबा ने सामाजिक क्रांति हेतु तीन मुख्य बातों को स्वीकार किया :–

1. तत्कालीन शोषित एवं उपेक्षित जनता को पराधीनता का एवं शोषण का अनुभव कराकर उसके प्रति उनके मन में क्रोध उत्पन्न करना।
2. उनमें आत्म सम्मान एवं आत्मगौरव का भाव जाग्रत करना।
3. विभिन्न जातियों में विभक्त वर्गों में मूलतः एक राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करना।

जीवन परिचय

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है, उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरूतियां को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किय, अछुतोद्वार, नारी–शिक्षा,विधवा–विवाह और किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र में हुआ था, उनका परिवार बेहद गरीब था और जीवन–यापन के लिए बाग–बगीचों में माली का काम करता था, ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था, ज्योतिबा का लालन–पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया, सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया, जातिगत भेद–भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोडद्यना पडद्या, स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमें पढ़ने की ललक बनी रही, सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की, घरेलू कार्यों के बाद जो समय बचता उसमें व किताबें पढ़ते थे, ज्योतिबा पास–पड़ौस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे, लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे।

अरबी–फारसी के विद्वान गफ्फार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ौसी थे, उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रूचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया, ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे, वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे, धर्म पर टीका–टिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि हिन्दू धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जाति–भेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते थे।

उन्हें इस प्रश्न का उतर नहीं सूझता कि–इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी, उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथों पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा, उसमें समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था, स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी, उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था, ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था, उन्होंने स्त्री सुर दलितों की शिक्षा के लिए सामजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया।

उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे, उस समय जात–पात, ऊँच–नीच की दीवारें बहुत ऊँची थी, दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे, ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे, वह बच्चों को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे, जैसे–जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

ज्योतिबा फुले द्वारा अपने जीवन काल मं निम्नांकित पुस्तकों की रचना की थीः–

1. तृतीय रत्न
2. छत्रपति शिवाजी
3. राजा भौंसला का रवड़ा
4. ब्राह्मणों का चातुर्य
5. किसान का कोड़ा
6. अछूतों की कैफियत
7. गुलामगीरी
8. सार्वजनिक सत्यधर्म,

फुले की इन पुस्तकों के माध्यम से उनके सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं शिक्षा सम्बंधी विचारों को समझा जा सकता है। तत्कालीन भारत में जो व्याप्त कुरितियां, सामाजिक सुसमानता आर्थिक अन्याय, अशिक्षा एवं जात–पात का भेदभाव एवं स्त्री उत्पीड़न के विरोध के लिए अथक प्रयास किया। अपने सम्पूर्ण जीवन काल के दौरान केवल सामाजिक सुधार के लिए अनेक कार्य किये थे। उनका मानना थी कि सामाजिक सुधार में प्राण फूंके जा सकते हैं। शिक्षा व्यक्ति को विचारों से आधुनिक बनाती है। जब व्यक्ति विचारों से आधुनिक बन जाता है, तो वह कुरितियों में विश्वास नहीं करता है एवं मानवतावाद की बात करता है। उनका मानना है कि जब प्रकृति ने किसी के साथ कोई असमानता नहीं की है तो हम कौन होते हैं? विषमता को उत्पन्न करने वाले। हमें सभी के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए और यही मानववाद का संदेश है। फुले के जीवन का मुख्य लक्ष्य ''समता मूलक'' समाज की स्थापना करना था। यह शिक्षा के माध्यम से समता मूलक सिद्धान्त की स्थापना करना चाहते थे। 1847 में टॉमस पेन की कृति RTGHTS OF MAN से बहुत प्रभावित हुये इस पुस्तक ने उनके मन को सामाजिक बदलाव की प्रेरणा दी। 1848 में सामाजिक क्रांति की शुरूवात की थी, जिसने असमाजिककता में कुठोर प्रहार किये। उनका मानना था कि शिक्षा वह औजार यह जो असमाजिकता की दिवार को तोड़ने का साधन है। महात्मा ज्योतिबा फुले की यह पंक्ति शिक्षा के महत्व को प्रकाशित करता है–

''दबे–कुचले वर्गों में
बुद्धिमता, नैतिकता,
प्रगति एवं समृद्धिका
विकास करने हेतु
शिक्षा की आवश्यकता
सर्वाधिक है''

साहित्य की श्रेष्ठ कृतियां कालजयी होती है। वे अपने समय का यथार्य प्रतिबिंवत करती है और सर्वकालिक भी होती है। अतः वे किसा काल विशेष की सीमा में बांधकर नहीं रखी जा सकती है। वे कालजयी होने के कारण मानव को निरंतर दिशा व प्रेरणा देती है। 'रामायण' 'महाभारत' 'रामचरित्र मानस' और भारत एक खोज' जैसे ग्रंथों में हमें दिव्यता और अलौकिकता के दर्शन होते है। इसलिए ये ग्रंथ आज भी उतने ही सार्थक और प्रसांगिक है। साहित्य हमें मनुष्य, समाज, संस्कृति, सत्यं–शिवं–सुदरम की पहचान कराता है। जो कृति सर्वोतम है उसका स्वीकार करे जो अप्रसांगिक है, उसे छोड़ देना चाहिए। जो मनुष्य और मनुष्य समाज के हित में है, विकास और परिष्कार के लिए है, सम्पूर्ण मानवता

के लिए कल्याणकारी है वही मनुष्य और उसके समाज के लिए प्रासांगिक है, सार्थक, वही अर्थपूर्ण है। ज्योतिबा फुले के सामाजिक सुधार की प्रासांगिकता निम्नालिखित हैः–

1. स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन।
2. सामाजिक लोकतांत्रिक व्यवस्था।
3. मानवतावादी दृष्टिकोण
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण
5. सत्य शोधक समाज
6. मूर्ति पूजा व पुरोहतवाद
7. श्री छगन भुजबल के कार्य
8. शिक्षा

स्त्री शिक्षा का प्रबल का समर्थन

ज्योतिबा फुले का मानना था कि समाज की उन्नति के लिए आवश्यक कि स्त्रीयों का उत्थान किया जाए और यह उत्थान केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव है। इस हेतु ज्योतिबा ने कन्या पाठशाला प्रारंभ किया था। इस पाठशाला की स्थापना 1848 में पूना में की गई। स्वतंत्र रूप से बालिका विद्यालय की स्थापना करने वाले फुले पहले भारतीय थे इनकी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री को प्रथम भारतीय हिन्दू महिला शिक्षिका का गौरव प्राप्त है। ज्योतिबा के शब्दों में–

''माताएँ जो संस्कार बच्चों में डालती है, उसमें उन बच्चों के भविष्य बीज (Seeds) होते है। इसलिए स्त्रीयों को अधिक से अधिक शिक्षित करना आवश्यक है''

यह भी सच है कि शहरों में गति के साथ परिवर्तन हो रहा है, वहां ग्रामीण परिवेश में आज भी स्त्रीयां शिक्षा से बहुत दूर है। फुले अपनी दूर दृष्टि से अपने समय में जान गए थे, कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी आवश्यक है क्योंकि वह विश्व भाषा बनने वाली है। फुले जी ने स्कूल खोलकर नारीयों के लिए जो ज्योति प्रज्जवलित की वह आज भी उतनी ही प्रसांगिक है।

सामाजिक लोकतंत्रिक व्यवस्था

ज्योतिबा का मानना था कि राजनीतिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की तुलना में सामाजिक व्यवस्था का लोकतांत्रिक होना अतिआवश्यकता है। जब तक समाज में समता स्थापित नहीं होगी तब तक भारत देश आगे व विकास के पल पर नहीं चल सकता है। ज्योतिबा ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि यूरोपीय देश विकास के पथ पर पढ़ रहे इसका मुख्य कारण यह है कि यूरोपीय देशों में सामाजिक विषमता नहीं है। आज भारत देश विकास दौड़ में बहुत पीछे हैं, क्योंकि भारत स्वयं अपनी घरेलू समस्याओं एवं सामाजिक विषमताओं में उलझा हुआ है। वर्तमान समय मे भारत का राजनीतिक वातावरण में भी इसी रंग में रंगा हुआ है। ज्योतिबा ने असमाजिकता पर कठोर प्रहार किया वास्तव में आज भी फुले के विचारों से हम सामाजिक विफलतायें एवं कुरीतियों को जड़ से उन्मूलन की राह चुन सकते हैं। इसमें किसी प्रकार का कोई भी संदेह नहीं है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शब्दों में – ''महात्मा फुले मॉर्डन इण्डिया के सबसे महान शुद्र थे, जिन्होंने पिछड़ी जाति के हिन्दुओं को अग्रणी जाति के हिन्दुओं का गुलाम होने के प्रति जागरूक कराया, जिन्होंने यह शिक्षा दी कि भारत के लिए विदेशी हुकूमत में स्वतंत्रता की तुलना में सामाजिक लोकतंत्र कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं''।

मानवतावादी दृष्टिकोण

फुलेजी का दृष्टिकोण मानवतावादी रहा। उनका मानना था कि मनुष्य जाति ओर धर्म के बल पर नहीं, अपितु कर्म के बल पर चलती है। जब प्रकृति ने सभी को समान बनाया है तो भेद भाव करने वाले हम कौन होते हैं? उन्होंने मानव मुक्ति की लड़ाई लड़ी थी। उनके द्वारा हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था को नकारा गया। वह एक नई समाज की बात करते हैं, जो पूर्णतः समता मूलक सिद्धान्तों पर आधारित हो। ज्योतिबा की निम्नांकित पंक्तियां मानवतावाद का चरितार्थ करती है–

''प्रत्येक गांव के एक प्राथमिक पाठशाला होनी चाहिए। किसानों के पास खेती के आधुनिक औजार होने चाहिए। लोगों में शराब पीने के सेठ साहूकारों से उधार लेने की आदत न हो और ब्राह्मण, पुरोहितों के चंगुल से लोग तथा गांव मुक्त हो, ऐसे समाज के निर्माण का मैं सपना देखता हूँ। ऐसे समाज के निर्माण से ही शुद्रो–अतिशुद्रो का उत्थान हो सकता है''।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

ज्योतिबा का आधुनिक विचारधारा इसलिए भी कहा जाता है, क्योंकि वह वैज्ञानिक विचारधारा के थे। उनके अनुसार मनुष्य अपनी जाति से नहीं कर्मों से श्रेष्ठ बनता है। वह दैवीय चमत्कार एवं भाग्य की कल्पना को कपोल तथा अर्थहीन मानते हैं। उनका कहना है कि – ''मनुष्य को अपनी अच्छी–बुरी करनी का फल यहीं मिलता है''।

फुलेजी के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदाहरण–फुले को सावित्री बाई से कोई संतान नहीं थी। उनके पिता ने उनके सामने दूसरे विवाह का प्रस्ताव रखा, परन्तु फुले ने यह प्रस्ताव ठुकराते हुए अपनी तर्क बुद्धि का परिचय देते हुए कहा कि पहली पत्नी के अगर संतान नहीं तो उसमें उसका क्या दोष है। दोष केवल स्त्री में नहीं पुरूष में भी हो सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिबा फुले एक वैज्ञानिक थे। हर बात की चित्कसा करते थे और तार्किक बुद्धि से निर्णय लेते थे। पिता की मृत्यु पर उन्होंने ब्राह्मणों के स्थान पर अनाथ और अपंग लोगों को भोज दिया, गरीब विद्यार्थीयों को पुस्तकें वितरीत की। ज्योतिबा फुले कहते हैं कि जो स्वच्छता को ही भूल जाता है, वह जीवन में कभी सुखी नहीं हो सकता। इससे स्पष्ट होता है कि फुले वैज्ञानिक विचारधार के थे। उनकी हर बात समाज के हित के लिए होती है उनके पास एक दिव्य दृष्टि एवं एक विशाल वैज्ञानिक दृष्टिकोण था, जिसके माध्यम से उन्होंने जनजागृति का आंदोलन चलाया। अतः वैज्ञानिक युग में भी फुले हमें अधिक प्रसांगिक लगते हैं।

सत्यशोधक समाज

ज्योतिबा ने सत्यशोधक समाज स्थापित कर सामाजिक आंदोलन का प्रयास किया। उस आंदोलन का प्रयास किया। इस आंदोलन के मूल में उनका रचनात्मक विचार था कि समाज की बहुसंख्यक जनता का सामाजिक शोषण से सभी मानवों को मुक्त करना। ज्योतिबा ने समाज में व्याप्त धार्मिक एवं सामाजिक दासता से मुक्त

होने के साथ ही उपनिवेशवादी व्यवस्था को समाप्त करने के उद्देश्य से 24 सितम्बर 1873 को सत्य शोधक समाज की स्थापना की। यह सम्पूर्ण महाराष्ट्र में प्रसारित समाज सुधार का पहला आंदोलन था। सत्यशोधक समाज का महत्वपूर्ण नारा था – ''सर्वसाक्षी जगपति नहीं चाहता विचवई''

सत्य शोधक समाज की सदस्यता सभी जातियों एवं धर्म के लिए खुली थी। इसके सदस्य हिन्दू, मुस्लिम एवं यहूदी सभी व्यक्ति थे। इनकी बैठक में अनेक महत्वूपर्ण बातों पर विचार विमर्श होता था, जैसे शराबबंदी, अनिवार्य शिक्षा, स्वदेशी विवाह खर्च कम करना, धर्म के नाम अनुचित प्रथाओं का विरोध करना, पुरोहित के बिना विवाह कार्य सम्पन्न कराना, व्यक्ति की मृत्यु होने पर तर्पण, पिण्डदान एवं श्राद्ध सम्बन्धी क्रियाओं का विरोध करना। सामाजिक परिवर्तन के शस्त्र के रूप में ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित यह आंदोलन अभी तक अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंचा है। अब यक समझा जा सकता है कि जब तक सामाजिक विषमता नष्ट नहीं हो जाती, तब तक यह सामाजिक विषमता नष्ट नहीं हो जाती, तब तक यक समझना बड़ी भारी भूल होगी कि हमें सम्पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई है। गांव या ग्रामीण स्तर में आज ऊंची जाति वाले दलितों पर अत्याचार करते हैं। समाज के लिए फुले आज भी प्रेरणा पुरुष है, उनके द्वारा जो समाज सुधार के लिए जो कार्य किया था, उन कार्यों को आगे बढ़ना अभी शेष है क्योंकि अभी भारतीय समाज में कुरितियां एवं अंधविश्वास स्थान लेकर बैठा है। इसलिए यह हम कह सकते हैं कि ज्योतिबा का सामाजिक सुधार के विचार आज भी जीवित है।

ज्योतिबा फुले शब्दों में–''भारत में राष्ट्रीयता की भावना का विकास तब तक नहीं होगा, जबतक खान–पान एवं वैवाहिक संबंधों पर जातीय बंधन बने रहेंगे''।

मूर्तिपूजा व पुरोहितवाद

ज्योतिबा ने मूर्तिपूजा, पुरोहितवाद और तीर्थयात्री का निषेध किया। उनके अनुसार ईश्वर की भक्ति के लिए पाण्डे (पण्डित) पुरोहित की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपनी धार्मिक सिद्धियों प्राप्त कर सकता है। फुले ने पुरोहितों का आजीवन पर कट्टर विरोध किया। पुरोहितों को फुले धर्म के ठेकेदार के नाम से सम्बोधित करते है। फुले सत्य शोधक समाज के बैठक कहा करते थे कि – ''बाल काटना नाई का धर्म नहीं, धंधा है, चमड़े की सिलाई करना मोची का धर्म नहीं धंधा है, इस तरह पूजा–पाठ करना–करवाना ब्राह्मण का धर्म नहीं, धंधा है।[2]''

वर्तमान युग में अन्य जातियों के द्वारा वेदों–उपनिषदों का गहन अध्ययन किया जाता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वेदो–पुराणों पर केवल ब्राह्मणों का ही एकाधिकार नहीं है। वेदों में तो यहां तक कहा गया है कि–व्यक्ति अपना कल्याण स्वयं ही कर सकता है, किसी विचौलियों की कोई आवश्यकता नहीं है। इस वाक्य को निम्नांकित पंक्ति सिद्ध करती है –''जांति–पांति को कोई पूछे नहीं, हरि को भजै सो हरि को होई''

शिक्षा

''बिद्या बिना गई, गति–मति बिन गई गति, गति बिन गई नीति, नीति बिन गया वित, वित बिन चरमराये शुद्र, एक अविद्या ने किये कितने अनर्थ।[3]''

–ज्योतिबा फुले

फुले की इस पंक्ति से यह सिद्ध होता है कि विद्या अर्थात् शिक्षा के बिना व्यक्ति की बुद्धि कार्य नहीं करती है और बुद्धि के बिना इस परिवेश में हम अपने आपको स्थिर नहीं रख पायेंगे। ज्योतिबा शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते है। उनका कहना है कि शिक्षा के अभाव में मानव अनर्थ कार्यों में लगा रहता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व चहुमखी विकास करती है। वर्तमान में पुरूष एवं महिलाओं द्वारा जो शिक्षा प्राप्त की जा रही है वह फुले के प्रयास का परिणाम है।

श्री छगन भुजबल के प्रयास

समतावाद विचारधार के आधुनिक महानायक श्री छगन भुजबल राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय समता परिषद के माध्यम से प्रयासरत है। राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न रेलौयों का आयोजन, अधिवेशन, संगोष्ठिया एवं महासम्मेलन उनके समता मूलक समाज अभियान अभिन्न अंग है। 11 अप्रेल 2019 को ज्योतिबा की जयंती मनाया जाना इस ओर संकेत करती है कि आज भी ज्योति व हमें सभी भारतीय के मध्य जीवत है। विभिन्न समितयों एवं शिक्षण संस्थाओं का नामकरण उनके नाम पर होना, उनकी सार्थकता को ही सिद्ध करता है।[4]

अंत टिप्पणी

1. *गूगल सर्च, विकीपीडिया द्वारा संकलित।*
2. *यू टुयूब (You tube) द्वारा उल्लेखित।*
3. *महाराष्ट्र राज्य साहित्य अणि संस्कृति मंडल मुम्बई की पत्रिका से उद्धृत।*
4. *यू टुयूब (You tube) द्वारा उल्लेखित।*